International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 45-48

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन

डॉ. आरती शर्मा*

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास के अध्ययन के लिए किया गया है इस अध्ययन हेतु राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के 800 (200 पुरुष 200 महिलाएं) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया आत्मविश्वास मापने हेतु शोधकत्री ने स्वनिर्मित मानकीकृत शिक्षक आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। शोध कत्री द्वारा संकलित प्रदतों के विश्लेषण के संदर्भ में माध्य मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना की जांच की गई प्रदत्तो के विश्लेषण के उपरांत यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत लिंग के आधार पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है विद्यालय के प्रकार के आधार पर अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया एवं विद्यालय क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों में आत्मविश्वास अधिक पाया गया है प्रस्तावनाः आत्मविश्वास सेल्फ कॉन्फिडेंस एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के संपादन में सरलता और सफलता मिलती है किसी के द्वारा आत्मरक्षा की जाती है जो व्यक्ति आत्मविश्वास से भरा हुआ होता है उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिंता नहीं रहती ऐसा माना जाता है कि उसे कोई चिंता नहीं सताती है और अन्य व्यक्ति जो की संधि एवं शंकाओं से दबे रहते हैं उनमें आत्मविश्वास की कमी मानी जाती है यह प्राणी की आंतरिक भावना है इसके बिना जीवन में सफल होना निश्चित है ।

किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि वहां की शिक्षा होती है और शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक होता है एक अच्छा शिक्षक वही है जो जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता रहता है और उसे विद्यार्थी बने रहने में आनंद आता है जब वह शिक्षक बन जाता है तो एक शिक्षक को बहुत सारी भूमिकाओं का एक साथ निर्वहन करना पड़ता है अभिभावक नेतृत्व करता पथ प्रदर्शक परामर्शदाता सहयोगी एवं विद्यार्थियों का मित्र जैसी निष्पक्ष व निर्णायक समालोचनात्मक भूमिकाओं का निर्माण वह अपने विद्यार्थियों एवं समाज के लिए करता है इन भूमिकाओं को अच्छी तरह से निर्वहन की योग्यता ही शिक्षकों में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है लेकिन आज शिक्षक की भूमिका में कमी देखी जा सकती है शिक्षक बनने और शिक्षक होने में अंतर होता है शिक्षक होने में शिक्षकत्व की मौजूदगी का एहसास होना जरूरी है। शिक्षक होने का अर्थ शिक्षक के गुणों को धारण करना है जिसे शिक्षकत्व कहा जाता है (जैन 2001) इस प्रकार शिक्षकत्व उन गुणों की ओर संकेत करता है जिसके होने से एक प्रभावी शिक्षक का व्यक्तित्व प्राप्त होता है यह ऐसा हुनर नहीं है जिसे हर कोई हासिल कर सकता है इसके लिए शिक्षक में आत्मविश्वास होना अत्यंत आवश्यक है आत्मविश्वास से आशा स्वयं पर विश्वास एवं नियंत्रण से है 28 अपनी शक्ति एवं योग्यता पर विश्वास सामान्य अर्थ में आत्मविश्वास का अर्थ है अपने आप पर विश्वास अपनी आत्मा पर भरोसा आत्मविश्वास एक ऐसा अंतरिक्ष गुण है जो शिक्षण एवं प्रशिक्षण द्वारा विकसित होता है (जैन 2015) एक आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक अपने शैक्षणिक क्रियाकलापों में ज्यादा सफल होता है आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक मानसिक भावनात्मक पक्ष से परिपक्व होता है आशावादी विश्वसनीय तथा जीवन में संतुष्ट होता है इतना ही नहीं आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक शिक्षण क्षेत्र एवं विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेता है इस प्रकार के

* सहायक आचार्य, एसएसजी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

शिक्षक अपने व्यवसायिक जीवन में ज्यादा सफल होते हैं और प्रत्येक कार्य को आत्मविश्वास के साथ पूर्ण करते हैं (बघेल एवं पुरकर 2016) उपर्युक्त परिभाषा ओं के आधार पर कह सकते हैं कि किसी भी कार्य की सफलता का प्रबल घोतक आत्मविश्वास है। आत्मविश्वास शिक्षक की आंतरिक शक्ति है आज किसी भी कार्य को करने के लिए आत्मविश्वास को नीव का पत्थर माना गया है आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक अपने व्यवसायिक जीवन में सफल होता है अध्ययन की आवश्यकताः एक शिक्षक का शिक्षण की अंतः क्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है शिक्षा जगत में शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के मानसिक शारीरिक सामाजिक एवं सामाजिक विकास हेतु महत्वपूर्ण मानी जाती है छात्रों का यह महत्वपूर्ण विकास शिक्षकों की भूमिका एवं उनके द्वारा शिक्षण क्रियाओं पर निर्भर करता है जो वे अपने शिक्षण के दौरान करते हैं लेकिन वर्तमान परिवेश में शिक्षकों की भूमिका में कमी देखी जा रही है जिससे शिक्षण का स्तर दिनों दिन गिरता प्रतीत होता है इसके अतिरिक्त यह भी प्रतीत होता है कि शिक्षण के दौरान शिक्षक में आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है और इसी आत्मविश्वास की कमी के कारण विद्यालय में अनुशासन हीनता अशांति जैसे अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रहे हैं और यह समस्याएं माध्यमिक स्तर पर अधिक दृष्टिगोचर होती हैं माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एक पथ प्रदर्शक मित्र निर्देशक और अनुदेशक की भूमिका निभाता है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अधिकांश शिक्षक छात्रों को उचित दिशा निर्देश प्रदान नहीं कर पा रहे हैं अब प्रश्न उठता है कि क्या माध्यमिक स्तर में पढ़ाने वाले शिक्षक छात्रों को यथोचित शिक्षा के अवसर प्रदान करने में अक्षम है क्या माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरुष शासकीय एवं अशासकीय ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के अंतर है इन सभी कारणों के पीछे क्या वर्तमान शिक्षक के आत्मविश्वास में कमी दिखाई पड़ती है इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए शोध कत्री ने उपरोक्त विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है ।
- माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि :प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के चर स्वतंत्र चर दृलिंग, विद्यालय प्रकार, विद्यालय क्षेत्र परतंत्र चर – आत्मविश्वास

न्यादर्शः प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श चयन के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि से राजस्थान के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के 800 शिक्षकों (200 पुरुष 200महिलाएं) का चयन किया गया। उपकरणः प्रस्तुत शोध में शिक्षक के आत्मविश्वास मापन के लिए स्वर्ण निर्मित मापनी शिक्षक आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीः प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी के लिए निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है

- माध्य
- प्रमाप विचलन
- टी परीक्षण

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1.1 लिंग के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान मानक मिश्रण और टीम मूल्य को दर्शाती तालिका 1

लिंग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी मान	सवीकृत / अस्वीकृत
माहिला	400	35.98	2.5	0.94	
पुरुष	400	36.14	2.33		

तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित आंकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः 35.98 व 36.14 तथा मानक विचलन क्रमशः2.50 व 2.33 है। जिनका टी मूल्य 0.94 प्राप्त हुआ हैं जो कि 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान 1.96 एवं 2.58 से कम है। इस से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत लिंग के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि अनुपम शर्मा (2011) कल्पना अग्निहोत्री एवं अटल बिहारी (2012) मोहन एम रेड्डी (2014) एवं रुचि सिंगला (2015) के अध्ययन निष्कर्षों से होती है।

परिकल्पना – 2

विद्यालय प्रकार के आधार पर भी शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान मानक विचलन एवं टी मूल्य को दर्शाती तालिका

2 तालिका

विधयालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी मान	सवीकृत ६ अस्वीकृत
शासकीय	400	35.65	2.01	4.88	अस्वीकृत
अशासकीय	400	36.48	2.70		

तालिका दो में प्रदर्शित आंकड़ों द्वारा स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः35.65 व 36.48 है एवं मानक विचलन क्रमशः2.01व 2.70 है जिनका टी मूल्य 4.88 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान 1.96 एवं 2.58 से से अधिक है।इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकार किया जाता है प्रभुत्व के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि प्रतिमा सिंह रुचि सिंगला एवं सुलक्षणा के अध्ययन निष्कर्षों से होती है।

परिकल्पना 1.3

विद्यालय क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य को दर्शाती तालिका।

तालिका 3

विधयालय क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वीकृत / अस्वीकृत
शहरी	400	35.64	2.01	4.86	अस्वीकृत
ग्रामीण	400	36.47	2.69		

प्राप्त आंकड़ों में मध्यमान पुरुष एवं महिला का क्रमशः 35.64 व 35.47एवं मानक विचलन क्रमशः 2.01 व 2. 69 टी मूल्य 4.86 प्राप्त हुआ है जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान 1. 96 एवं 2.5 से अधिक है अतः

परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है प्रदर्शित आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि अनुपम शर्मा एवं रुचि सिंगला के अध्ययन निष्कर्षों से होती है।

शोध निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर महिला और पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर नहीं है जिसका संभवत कारण यह हो सकता है कि आत्मविश्वास का लिंग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि आज सभी शिक्षकों को एक साथ शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान कर व्यवसायिक कौशल को विकसित किया जाता है एवं दोनों ही वर्गों के शिक्षकों को समाज द्वारा समाज सामाजिक सम्मान और महत्व दिया जाता है जिस कारण आत्मविश्वास पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का अधिक है जिसका संभवत कारण यह हो सकता है वर्तमान समय में सरकार द्वारा शिक्षकों के लिए अनेक प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम में विज्ञान के साथ–साथ तकनीकी एवं आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।इस प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षण कला में पारंगत होकर अपने आप आत्मविश्वास बढ़ जाता है यही कारण है कि अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक होता है। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की आत्मविश्वास में सार्थक अंतर है ।ग्रामीण क्षेत्र में कार्य कर रहे शिक्षकों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों का आत्मविश्वास अधिक है ।इसका संभवत यह कारण हो सकता है कि आज शहरी क्षेत्र के विद्यालय आधुनिक तकनीकी से युक्त स्मार्ट क्लासेस एवं आधुनिक एवं भौतिक संसाधनों के कारण विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से संबंधित समस्याएं हल करने में शिक्षकों को सहायता मिलती है शहरी क्षेत्र के शिक्षक नई तकनीकी से ओतप्रोत रहते हैं इसीलिए उनका आत्मविश्वास अधिक होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल एचके अनुसंधान विधियां आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
2. जैन, अभय कुमार, सफलता प्राप्त करने के सूत्र हिंदुस्तान टाइम्स जैन
3. पायल ,भोला ,स्वयं की पहचान आगरा पब्लिकेशंस
4. बघेल, राधेश्याम एवं पुरकर शोभा शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव का अध्ययन
5. जर शील्ड एटी किशोर मनोविज्ञान बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना
6. मलिक, उपेंद्र, एवं योगेश स्टडी ऑफ इफेक्ट ऑफ सेल्फ कॉन्फिडेंस ऑन एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सीनियर सेकेंडरी स्कूल
7. रुचि कांपीटेसी ऑफ टीचर एजुकेशन रोहतक हरियाणा
8. शिक्षामित्र एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन एवं आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन
9. अग्निहोत्री एवं अटल बिहारी प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूल के शिक्षकों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन

❖◆❖